वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 21	Year 2	Volume 9	2014 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 2

विचार

अपने मन को श्रेय मार्ग पर ही लगायें

सूर्य चन्द्र के स्वस्थी पथ पर हे प्रभु चलते रहें
दानी, ध्यानी, अहिंसक बन सत्संग सदा करते रहें।।

यह संदेश ऋग वेद के मन्त्र में है जिसका भाव है कि हे ईश्वर ऐसी कृपा करें कि जैसे सूर्य और चन्द्रमा सारे संसार और प्राणीजगत का कल्याण अपनी किरणों द्वारा करने मे लगे हुये हैं हम भी उसी तरह विना किसी भेद भाव के दूसरों के कल्याण में लगे रहें। यह परोपकार तभी संभव है जब हम दानी वने, आप का ध्यान करके आप के इश्वरीय गुणों को धारण करे, किसी पर किसी भी तरह की हिंसा न करें और इन साधनों द्वारा सत्संग में ही रहें।

May we follow and traverse the path of benevolence like the Sun and the Moon and achieve this by remaining in a good company which is possible with charities, by communing with You and following nonviolent and peace generating methods.

एक बार किसी धनी के पास ऐक व्यक्ति ने नौकरी के लिये प्रार्थना की। घनी व्यक्ति ने उससे पूछा–– क्या वेतन लोगे? नौकरी के अभिलाषी ने कहा––मेरा वेतन यही है कि मुझे हर समय काम मिलता रहे। जब तुम मुझे काम नहीं दोगे, मैं तुम्हें मार डालूंगा। धनी ने सोचा–– ''यह तो बहुत अच्छा सेवक है जो वेतन कुछ भी नहीं मांगता, किन्तु काम हर समय चाहता है और कभी आराम नहीं चाहता। मैने अपने काम के लिये कई आदमी रखे हुये हैं। बहुत सारा वेतन देता हूं। क्यों न इसे ही

जीवन में श्रेय मार्ग अपनाने का बहुत सुन्दर उदाहरण है। 1878 में B.A. की डिगरी होने के वाबजूद, सरकारी पद न लेकर डी.ए.वी. विद्यालय और कालान्तर में महाविद्यालय की अवैतनिक 25 व"k तक सेवा की। यही नहीं उसके बाद का सारा जीवन भी समाज सेवा में लगाया।

Contact: Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

रख कर बाकियों को निकाल दिया जाये। इस प्रकार सोचकर धनी व्यक्ति ने उसे नौकरी पर रख लिया।

नौकर काम करने में बहुत तेज था। इधर मुंह से काम का आदेश निकला नही कि कार्य पूरा हो जाता था। उस धनी का पूरे दिन का काम जो कि कई व्यक्ति करते थे एक घटें में ही पूरा हो जाता पर इस ने घनी कि चिन्ता बहुत बड़ा दी। ––अगर इसे काम न दिया तो यह मुझे मार डालेगा। काम दे तो कहां से रोज इतना काम लायें जो कि इसे पूरा दिन व्यस्त रखे। इस चिंता ने धनी को व्याकुल कर दियां खान पान सब नीरस हो गया। एक दिन किसी बुद्धिमान व्यक्ति ने उस धनवान से पूछा––इतना धन सम्पति होते हुये भी तुम इतने दुवले कमज़ोर क्यों होते जा रहे हो? धनी ने सारी कथा कह सुनाई। बुद्धिमान ने साचा और बोला–– तुम इसे केवल अपने ही कामों में क्यों सीमित रखतें हो? इसे मोहल्ले नाले व गांव वालों का काम करने को भी दे दो। इस तरह यह व्यस्त रहेगा और तुम इस के हाथों बचे रहोगे।

यही अवस्था मनु"; ds eu dh gSA ftl le; bls 'kHk deksZa ls vodk'k feyxk, उस समय मनु"; dk eu b/kj m/kj Hkkxxk vkSj mldh lkp ukdkjkRed Hkh cu ldrh gS ftlds dkj.k og uk'kdkjh deksZa esa yx ldrk gSA bl ls cpus dk lcls vPNk mik; gS fd euq"; vius vki dks ijksidkjh dk;ksZa esa yxk;sA tc dh ijksidkjh dk;ksZa dk Qy lnSo vPNk gh gksrk gS cjs dke djus ls nq[k vkSj foifr;ka gh lkeus vkrh gSA ijUrq euq"; ds vius dke brus FkksM+s gS fd mlls og f'k?kz gh lekIr dj ysrk gS vkSj tc mlds ikl dke ugha gksrk rks mlds eu b/kj m/kj HkkxrK gSA

Hkxoku jkepUnz us Hkh gueku dks ;gh lans'k fn;k Fkk&&&gs gueku bPNk;sa nks ekxZ gSa] ,d Hkyh bPNk;sa] nljk cqjh bPNk,A tks bPNk bZ'oj vkns'k ds vuq:Ik gS og Hkyh gS] tks fo:) gS] og cqjh gSA vr% bZ'oj dks lo= fo|eku tkudj vkSj blls fopkj dks lkeus j[kdj fd mldh vkKk ds fo:) dk;Z djus ls nq[k Hkkxuk iM+xk] 0;fDr dks nljks dh Hkykbz ftlls ijksidkj dgk x;k gS] djus pkfg;sA tks ykx ijksidkj ds dk;Z djrs gSa os lnk [kq'k jgrs gSA tc rd ik.k gS] 0;fDr ijksidkj ds dk;ksZa esa gh yxk jgsA [kkldj bl ckr dks /;ku esa j[krs gq;s fd euq"; thou cgqr eY;oku gS] ef'dy ls ikIr gksrk gS vkSj fQj ls euq"; pkyk rHkh feyxk vxj gekjs deZ vPNs gksxs vFkkZr ge ijksidkj ds dkeksa esa gh bl thou dks yxk;s j[kxsA tks 'kqHk deZ nljks dh Hkykbz ds fy;s fd;s tkrs gSa] os dHkh cU/ku dk dkj.k ugha cuxs vFkkZr efDr vkSj ije vkuUn ds vf/kdkjh cuxsA

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE **अवश्य दे**
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**

   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, ICICI Bank - 659201411714, **IFC Code - ICIC0006592**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

;fn vki cSd esa tek ugha djok ldrs rks d`i;k **at par** dk pSd Hkst nsaA

Editorial

शौच(Cleanliness of self and environment) और हमारे धार्मिक स्थल

_f"k पतंजली ने जीवन को आन्नदमय बनाकर समाधी अर्थात मोक्ष तक पहुंचने के लिये जो पांच 'यम'––– सत्य, अहिंसा, चोरी न करना, ब्रहम्चर्य, उतना ही पास रखना जितना चाहिये अर्थात जरूरत से अधिक संग्रह न करना व पांच 'नियम'–– शौच, सन्ता"k] तप, स्वाध्याय व ईश्वर को सर्मपण बतायें हैं उन में शौच भी एक है। शौच का अर्थ है स्वच्छता न केवल अपनी स्वच्छता बल्कि आसपास के वातावरण की स्वच्छता भी। चाहे आज हमारे देश में जो धर्म का स्वरूप बन गया है उसमें इन यम नियमों का स्थान नहीं और शौच (स्वच्छता, खासकर आसपास के वातावरण की स्वच्छता का स्थान,) का तो बिल्कुल नही परन्तु महात्मा गाँधी का जीवन पढने के बाद यह स्प"V है कि उनके लिये शौच' का बहुत महत्व था।

गाँधी जी साबरमती आश्रम मे सफाई करते हुए

1903 में महात्मा गाान्धी पहली बार बनारस जिसे काशी कहा जाता है गये। हिन्दु होने के कारण यह स्वभाविक था कि वह काशी विश्वनाथ के मन्दिर भी गये। जो उन्होने वहां देखा उस से प्रभावित होना तो दूर की बात है उन के मन को बहुत दुख हुआ। चारों और मक्खियों की भरमार थी। वहां पर इतना शोर था जो कि असहनिय था। जब कि भगवान के घर में शान्त वातावरण का होना आवश्यक है वहां सब इसके विपरीत था। वह मन्दिर के अन्दर गये तो सड़े हुये फूलों की बदबू के कारण उन्हे वहां खड़ा होना मुश्किल हो रहा था । फर्श जगह जगह से टूटा हुआ था। वह मन्दिर के चारों और घूमें पर उन्हें नहीं लगा कि ऐसे स्थान पर भगवान रहता होगा या फिर ईश्वर के दर्शन हो सकतें हैं। वह बहुत निराश होकर वहां सं लोटे।

इस के ठीक 13 साल बाद फिर महात्मा गान्धी को बनारस जाने का अवसर मिला। उन्हें बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के उदघाटन समारोह में बुलाया हुआ था। कई राजा महाराजा और कांग्रसी नेता वहां मौजूद थे। पर गाांधी जी को उस समय अधिक लोग न तो जानते थे और न ही भारतीय रातनीती में उनका वह सर्वोच स्थान था जो कि बाद में बना। गांधी जी उस से एक दिन पहले ही काशी विश्वनाथ मन्दिर जाकर आये थे और वहां की हालत वैसे ही थी जो उन्होने 13 साल पहले देखी थी।

मुख्य वक्ताओं के बोलने के बाद गांधी जी की बारी आई। जो वे बोले उसका सारांश इस प्रकार है–– ''ज़ाहिर है आपने इस उदघाटन सामारोह को आलीशान बनाने में बहुत धन और पैसा खर्च किया है। यह हिन्दुओं के लिये गौरव की बात है। मैं हिन्दु होने के नाते आपसे पूछता हूं कि क्या आपने कभी काशी विश्वनाथ मन्दिर जाकर वहां का हाल देखा है। यदि कोई व्यक्ति बाहर देश से वहां जाये तो वह हम हिन्दुओं के बारे में क्या राये बनायेगा? यदि वह हम को धृणित होकर देखे तो मैं नहीं समझता उसकी कोई गलती होगी। हर जगह गन्दगी, बदबू, मक्खियां और तंग गलियां देखकर मैं नहीं समझता कि कोई विदेशी हमें स्वराज के योग्य पायेगा, जिसके लिये हम संघ"k में लगे हुये हैं। जो व्यक्ति अपने भगवान के घर को इतना गन्दा रखते हो मैं नहीं समझता वह अपने देश को अच्छा रख सकते है।

यह पहली वार थी कि किसी नेता ने ऐसी स्प"V बात की हो। वहो पर मौजूद सभी नेता गाधी जी से खफा थे और नतीजा यह हुआ कि मदन मोहन मालविय और ऐनी बिसेंत ने उन्हे आगे नहीं बोलने दिया और बिठा दिया । जो राजे महाराजा वहां आये वे सब गांधीं जी की बात से इतना क्षुब्ध हुये कि उठ कर चल दिये।

आज उस बात को ठीक 100 व"k gk गये हैं। इस बीच यहां से अंग्रेज़ चले गये, महात्मा गाधीं जिन्हें बापू कहा जाता है और जिन के नाम पर भारत की मुख्य राजनैतिक पार्टी
60 व"ों तक शासन करती रही, भी नहीं रहे। हमारे देश के शासन की डोर अधिकतर ऐसे व्यक्तियों के हाथ में रही जो विदेशों में रहे या वहां से शिक्षा प्राप्त कर के आये, जहां कि अपनी और वातावरण की सफाई को बहुत महत्व दिया जाता है। पर किसी ने भी धार्मिक स्थलों पर सफाई के मुददे को नहीं छूआा। परिणाम काशी विश्वनाथ मन्दिर और अधिकतर दूसरे हिन्दु मन्दिरों की सफाई के बारे में हालत वैसी ही है जैसे 100 व"k पहले थी।

ऐसी हालत के मध्यनजर अभी कुछ दिन पहले हमारे देश के प्रधानमन्त्री उमीदवार नरेन्द्र मोदी ने बहुत सही कहा कि हमारे देश को मन्दिर नहीं शौचालय चाहिय। यही बात एक कांग्रेस मन्त्री जयराम रमेश ने भी एक साल पहले कही थी पर भारत जैसे देश में, जहां लोग खुद चाहे भूखे रह लें पर भगवान को भोग अवश्य चढ़ाते हैं व गांव में चाहे विद्यालय व अस्पताल न हो पर दो तीन मन्दिर अवश्य होते है, यह बात चर्चा का वि"ाय बनना स्वभाविक था। पर देखने वाली बात यह होगी कि क्या मोदी प्रधानमंत्री बनने के बाद इस दिशा में कुछ कर पायेंगे।

जहां तक मेरा सोचना हैं, मैं समझता हूं कि इस दिशा में राजनितीज्ञों को नहीं हमारे धर्मगुरूओं को और समाज के पढ़े लिखे तबके को पहल करनी होगी। हमें यह समझना होगा कि शौच यानी कि स्वच्छता जिसमें न केवल अपनी स्वच्छता आती है बल्कि आसपास के वातावरण की स्वच्छता भी आती है हमारे धर्म का मुख्य अंग हैं और स्वच्छता के बिना धर्म अधूरा है, खास कर जब ge bl बात को देखते हैं कि भारत को सफाई के लिहाज से दुनिया के सब से गन्दे देशों में रखा जाता है।

समाधान

सब से पहले हमारे धर्माचायों को पहल करनी होगी। बजाये इसके के महा आरती में अगुआ बनें, यज्ञ का ब्रहमा बनें, सब से पैरों को हाथ लगवायें, आर्शीवाद दे व दक्षिणा इकटठी करें, उन्हे हाथ में झाड़ू लेकर सफाई को पहल देनी होगी। अगर महात्मा गांधी आश्रमों में झाड़ू लेकर पखाना साफ कर सकते हैं तो वे क्यों नहीं। अगर नहीं कर सकते तो उन्हें धार्मिक गुरू कहलाने का अधिकार नहीं। जब वह सफाई अभियान में आगे होंगे तो चेले और श्रद्धालू स्वयं ही सफाई में लग जायेंगे। किसी को कहने की आवश्यकता नहीं होगी।

हमारे देश से सटा हुआ, हमारा ऐंक पड़ोसी देश श्री लकां है। आज से कुछ व"ों पहले मुझे वहां जाने का अवसर मिला। जिस बात ने मेरा मन जीत लिया वह थी साफ सफाई व वहां के लोगों का सफाई को महत्व। मैं हैरान इस बात से था कि श्री लंका वैसे ही है जैसे कि हमारे देश का कोई दूसरा प्रान्त, यूं कहे बंगाल, फिर साफ सफाई व लोगों की साफ सफाई को लेकर आदतों में इतना बड़ा अन्तर क्यो?

20 दिनो के दौरान मैने घरों , मन्दिरों, दफतरो व सड़को beaches व parks आदि में जो देखा व जिसका सफाई व सभ्यता से सीधा सम्बन्ध है, वह ब्योरा इस प्रकार है,

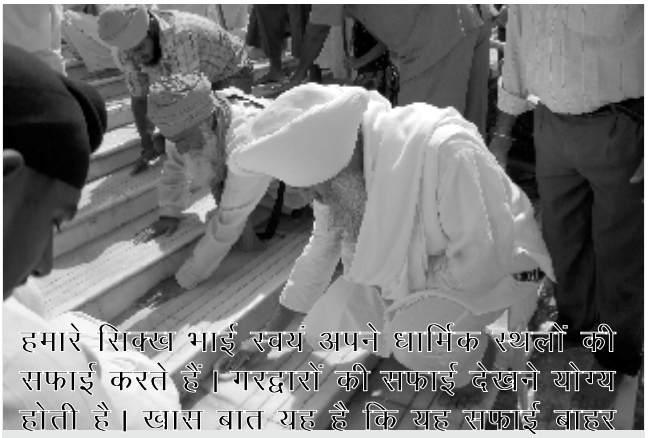

हमारे सिक्ख भाई स्वयं अपने धार्मिक स्थलों की सफाई करते हैं। गरद्वारों की सफाई देखने योग्य होती है। खास बात यह है कि यह सफाई बाहर वाले नहीं करते श्रधालु स्वय करते हैं।

मैने बोद्ध बिहारों में क्या देखा कि सभी भिक्षु सुवहः 4 बजे उठ कर सीधा झाड़ू व पानी की पाईप लेकर सफाई मे लग जाते हैं। मज़े की बात यह है कि बोद्ध बिहार का मुखिया जो की सब से बड़ा भिक्षु होता है सब से आगे होता है और दो घटें यह काम चलता है। जिस दौरान बाग बगीचों को भी पानी दिया जाता है। यानी कि भक्ति बाद मे, सफाई पहले। यही नहीं, दिन में दो तीन बार भिक्षु ही साफ सफाई करते हैं, कोई बाहर से सफाई करने नहीं आता। अब एक नज़र दोड़ाऐं अपने धार्मिक स्थलों पर। आप यह सोच भी नहीं सकते कि हमारा धार्मिक मुखिया झाड़ू को हाथ लगायेगा। उसका काम तो महा आरती करना, यज्ञ का ब्रहमा बनना, सब से पैरों को हाथ लगवाना, आर्शीवाद देना व दक्षिणा इकट्ठी करना है।

कोलम्बो में मुझे एक मित्र के धर भी रहने का अवसर मि

क्या देखता हूं कि सारा परिवार सुवहः 5 बजे उठ कर अपना– अपना झाड़ू लेकर सारा परिवार सफाई में लग गया। यही नहीं अपने धर के बाहर की सफाई भी उंचे वाला झाड़ू लेकर ख़ुद करते थे। स्थानीय प्रशासन की गाड़ी निश्चित समय पर आती थी और वे अपना व आसपास का कूड़ा उस में डाल देते। अनुराधापुरम में मैं जिस होटल में रहा वहां होटल का मालिक भी साथ लगे अपार्टमैंट में रहता था। वही सब वहां देखने को मिला। सुवहः होते ही अपना– अपना झाड़ू लेकर सारा परिवार सफाई में लग गया। बातचीत करने पर मालुम हुआ कि श्री लंका में सफाई करने वाले नहीं होते, सभी को घरों की सफाई अपने आप करनी होती है।

एक बात निशचित है जब सफाई को धर्म का मुख्य अंग बनाकर जब हमारे धर्म गुरू पहल करेंगे तो सारे देश की फोटो बदल जायेगी। पर कुछ हमें भी करना होगा हम यह मानकर न चलैं––हमारा काम है गंद

डालना, उठाना दूसरे का काम हैं । इसके स्थान पर यह यह नियम बनायें कि अगर मैं गन्दगी डालूंगा तो उठाउंगा भी।

सफाई एक ऐसा वि"ाय है जहां आदेश से नहीं आपका अपना आचरण ही काम कर सकता है

यदि आप यह सोचें की सफाई के मामले में आपका आदेश काम कर जायेगा तो आप गलती में हैं। हाँ जिनको इस काम के लिये वेतन मिलता है उनकी बात अलग है पर आप ऐसा सोचें कि आप सफाई के मामले में जागरूक न हों और दुसरों को अपेक्षा करते रहें तो शायद आप सफल नहीं होंगे।

इसके तीन उदाहरण हैं

पहला––साबरमति आश्रम में जो भी महात्मा गांधी से मिलने जाता उसे अगर वहां रहना था तो पाखाना खुद साफ करना होता था जो कि बड़े से बड़ा व्यक्ति खुशी से करता था कारण महात्मा गांधी इस कार्य को खुद किया करते थे।

दूसरा–– अभी आपने वाराणसी काशी में भारतीय जनता पार्टी के कार्य कर्ताओं को सडकों पर झाड़ू लगाकर सफाई करते देखा होगा। ऐसा पहली बार हुआ ओर इसका कारण था कि नरेन्द्र मोदी ने उन्हें सफाई के बारे में जागरूक किया। नरेन्द्र मोदी का कहना था कि आप काशी को विश्व का धार्मिक केन्द्र तो बनाना चाहते हो पर अगर काशी ऐसे ही गन्दी रही तो कौन इसे विश्व का सब से बड़ा धार्मिक केन्द मानेगा।

तीसरा––जो हमारे नवयुवक विदेशों मे खास कर उन्नतशील देशों में जातें हैं वे वहां इस लिये बिना हिचकचाहट के सार्वजनिक स्थलों की सफाई का काम कर लेते हें क्योंकि वहां सफाई का कार्य किसी खास वर्ग के लिये नहीं है। सब को सफाई से प्यार है।

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values'

विश्वास

एक पिता अपनी छोटी सी बेटी के साथ जा रहे थे तभी एक बरसाती नाला आ गया। पिता ने बेटी से कही मेरा हाथ पकड़ लो।
बेटी झट से बोली––नहीं पापा आप मेरा हाथ पकड़ लो।
पिता ने पूछा इस में क्या फर्क पड़ता है?
बेटी बोली–––पापा मैं पकडूंगी तो मेंरा हाथ तो छूट भी सकता है। पर अगर आप मेरा हाथ पकड़ेगे तो मैं जानती हूं आपकुछ भी हो मेरा हाथ नहीं छोड़ेंगे।
यह है विश्वास। आपका विश्वास पहाड़ को न भी हिलाये पर उपर तक अवश्य पहुंचा सकता है।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

धानी मियां खान गांव की औरतों का साहसिक कदम

हरियाणा प्रांत में एक गांव है धानी मियां खान जहां की औरतें भारत की आज़ादी के 67 साल बाद भी सिर और मुंह को ढक कर रखती थी––अर्थात पर्दा प्रथा को अपनाया हुआ था। अभी हाल में उन्होने एक साहसिक कदम लेते हुये अपने मुंह से पल्लु को हटाकर सदीयों से चल रही पर्दा प्रथा को त्याग दिया।

इस कदम से उन्होने यह बता दिया कि यदि i|:"k को अपनी इच्छा अनुसार अपनी मूंछ, बाल और दाड़ी बनाकर अपने रूआब को बताने का अधिकार है तो स्त्री को भी शालीन तरीके से अपने व्यक्तित्व को सामने लाने का अधिकार है। यह कदम स्त्री i|:"k बराबरी का सूचक है। उन स्त्रीयों के अनुसार –––जब हमने अपना घुंघट हटाया तो एक स्वतन्त्रता का आभास हुआ। हां यह बिल्कुल सत्य है। जब की पर्दा i|:"k समाज की गुलामी का सूचक है। यहां यह समझना आवश्यक है कि मन";मुंह ढक कर तभी चलता है जब कोई गलत काम करते पकड़ा जाये। फिर हम स्त्रीयों से यह अपेक्षा क्यों करे कि वह मुंह ढक कर रहें।

वेदों में स्त्रीयों को पर्दा करने का कोई आदेश नहीं है। बल्कि उसे यज्ञ,पूजा या घर में हर संस्कार या कार्य में स्वतन्त्र रूप से बिना पर्दे के भाग लेने का आदेश है। _f"k मनु ने तो स्त्री को घर की लक्ष्मी कहा है जिसकी पूजा की जानी चाहिये। उसका रोल घर में भोजन बनाने या चाकरी तक ही नहीं है परन्तु उसे घर का आर्थिक प्रबन्धक भी बताया गया है। जो भी पुरातन काल के अवशेश मिलते हे वे इस बात का सूचक हैं कि मुगलों के आने से पहले भारत में पर्दा प्रथा बिलकुल नहीं थीं।

भारत में पर्दा प्रथा मुगलों के साथ आई। इसके दो कारण थे। पहला, क्योंकि हिन्दु मुगलों के गुलाम थे। इसलिये मुगल चाहते थे कि हिन्दु वही रीती रिवाज का पालन करें जिनका वे करते हैं। दूसरा हिन्दु अपनी लड़कियों को मुगलों से बचा कर रखना चाहते थे। इसलिये उन की शादी बचपन में ही कर देते थे और उनको दूसरों की नजरों से बचने के लिये जीवन पर्यन्त पर्दे में रहने के लिये मजबूर किया जाता था जिसने की समय के साथ प्रथा का रूप ले लिया।

मुग्रुलों के विपरीत अंग्रेज़ भारतीय नारी के जागरण व उत्थान के प्रवल समर्थक थे। उन्होने भारतीय नारी को समाज की व i|:"k की गुलामी से मुक्त करने के लिये बहुत से कदम उठाये और राजा राममोहन राय और महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे महान समाज सुधारकों को स्त्री के उत्थान, सम्मान व पुरूषों के समान अधिकार देने के लिये खुल कर काम करने दिया। जब कि संस्कृत भाषी पण्डितों ने जिन को आर्य समाज गले लगाता है, उन्होने इन समाज सुधारकों का हर कदम पर विरोध किया।

यह बहुत दुख की बात है कि बहुत से मुसलमानों ने पर्दा प्रथा को अपने धर्म के साथ जोड़कर इस बारे में स्त्रीयों से बहुत अन्याय किया है। मैं टर्की जैसे कई मुसलमान देशों को जानता हूं जहां कि स्त्रीयां पर्दा नहीं करती हैं। यह भी कहना मुश्किल है कि मूल कुरान में यह आदेश है कि नहीं। क्योंकि प्रोफेट मोहम्मद का जितना जीवन मैने पड़ा है उस में उनके विचार रूढ़ीबाद से हटकर प्रगतीशील मालुम हुये। वे विचारक थे व स्वामी दयानन्द की तरह ही तर्क में विश्वास करते थें।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Amit Arts 36 MW Industrial Area, Ph-I, Chandigarh 9216504644
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

हां यह सोचना कि अगर रूत्री ने पर्दा किया है तो मर्द की बुरी नज़र से वची रहेगी तर्क संगत नहीं लगता। बुरी नज़र वालों का मन कहीं भी पहुंच जाता है। हां एक स्त्री अपने व्यक्तित्व को न दिखा सके यह उसके साथ बहुत बड़ा अन्याय है। अमानविय व्यवहार का सूचक है। एक मिनट के लिये हम मर्दो को यह कहा जाये कि अपने मुंह ढक कर रखो तो शायद हम सड़कों पर उतर आयेंगें।

हां, धामिर्क स्थलों पर सिर का ढकना इससे अलग है। वैसे भी सिर ढकने में और मुंह ढकने में जमीन आसमान का फर्क है। सिर का ढकना तो शोभनीय है, मुंह का ढकना शर्म व लज्जा का सूचक हैं।

भारत में यह परम्परा वहां अधिक रही जहां मुगलों का राज रहा। दक्षिण के प्रांत जहां मुगल नहीं पहुंच सके वहां पर्दा प्रथा नहीं है। वहां शादीयों में भी स्त्री सिर नहीं ढकतीं।

खैर धानी मियां खान की औरतों ने वाक्य में ही बहुत साहसिक कदम उठाया है, जिसका उन सब औरतों को भी अनुसरण करना चाहिये जहां अभी भी यह प्रथा लागू है।

1875 से 1940 तक आर्य समाज ऐसा fo"k;k को उठाकर अंदोलन करता था पर आज इनका स्थान हवन, संस्कुत प्रचार व मन्त्र उच्चारण ने ले लिया है। ऐसे में आर्य समाज से समाजिक कुरीतियों के विरूध आवाज डठाने की अपेक्षा नहीं कर सकते। आखिर ऐसे अन्दोलनों में कमाइ थोड़े भी है। दूसरों का भला बुरा सुनना पड़ता है। हवन किया भजन बोले कमाई ही कमाई है।

मंसाहार क्यों नहीं

मनमोहन कुमार आर्य

हमारे पशु, पक्षी व सभी मनुष्येतर प्राणी भी हमारी सृष्टि और पर्यावरण का अंग हैं। ईश्वर ने, जिसे हमारे नास्तिक बन्धु अज्ञान, हठ व दुराग्रह से 'प्रकृति' कहते हैं, मनुष्य को शाकाहारी प्राणी बनाया है। मनुष्यों के दांतों की बनावट शाकाहारी प्राणियों के समान है। मांसाहारी प्राणियों के दांतों की बनावट व आकृति शाकाहारी प्राणियों से अलग प्रकार की होती है। मनुष्य की भोजन पचाने की प्रणाली भी शाकाहारी प्राणियों के समान है। शाकाहारी पशु अपनी सारी आयु स्वस्थ व सुखी रहते हुए व्यतीत करते हैं। उनके सामने सामिष वस्तुएं या भोजन रखा भी जाये तो भी वह उसका प्रयोग नहीं करते। इसी प्रकार ऐसे लाखों निरामिष भोजी लोग हैं जिन्होंने अपने पूरे जीवन किसी सामिष पदार्थ का भक्षण नहीं किया और 80 व 100 वर्ष के बीच की आयु में भी पूर्ण स्वस्थ हैं। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य स्वभावतः सामिष भोजी नहीं है। सामिष-भोजी मनुष्यों की प्रकृति, स्वभाव, जीवन, स्वास्थ्य, चरित्र, मन व बुद्धि, काम की प्रवृत्ति यह सभी मांसाहार व मदिरापान आदि से कुप्रभावित होती हैं। सामिष भोजन करना व मूक प्राणियों को किसी भी प्रकार से दुःख देना ईश्वर व प्रकृति के प्रति जघन्य अपराध है जिसका दण्ड, न कम न अधिक, तो ईश्वर से समय आने पर मिलता ही है। अतः ''जिओ व जीने दो'' के सिद्धान्त का पालन प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिये। इस सिद्धान्त में अंहिसा तो है ही साथ में यह सृष्टि व प्रकृति को मानव जीवन के प्रति अधिक उपयोगी व सहयोगी बनाता है और मानव जीवन को सुखी, स्वस्थ व निरोग रखता है।

देहरादून, फोन न. 09412981521

Single minded pursuit of money impoverishes the mind, shrivels the imagination and desiccates the heart.

Getting interested in others is a way to be happy

Bhartendu Sood

He was in mid thirties and would often come to me to share his family problems. His family comprised of a loving wife and two loving children. One day when we had finished our official work he confided, "Sir, I'm plagued by a serious problem which has taken away the peace of our family." Finding my silent nod he continued "Our next door neighbor is a middle aged childless couple. They watch their TV with voice at full volume. Since the drawing rooms of our respective houses have a common wall this demeanor which now has become a practice, disturbs the studies of my small children. The lady of the house, though a teacher in top public school, is not prepared to pay any heed to my wife's frantic appeals and it has become a standoff between the two. Her husband lives in his own world and is not prepared to buy the displeasure of his wife."

"O.K. Give me some time" I said and we called it a day.

Next day I called him in my chamber and suggested "Today, when you go back to your home, ask your school going daughter to go to the lady in your neighbour with a request for some help in her studies"

Hardly a month had passed when he came to me with a beaming face, "Sir, your suggestion worked wonders. Now everyday she invites both my the children and helps them in studies. Not only this, she and my wife spend lot of time chatting and all of a sudden she is a wonderful lady in the eyes of my wife,"

The art of getting along with people and the ability to win friends has repeatedly proved to be a major contributing factor to the success of legendary men. Some are naturally endowed with superior social intelligence others have to learn and it is never too

difficult. A few simple approaches that make us people friendly are--- Getting interested in others, talking less about ourselves, encouraging others to talk, listening better, seeing the good in everyone, thinking of win-win outcomes in our dealings with all and the openness to give ample credit and appreciation to others are the ground rules in developing social intelligence. Besides getting us friends, this approach will eventually make us wise as well.

वर की आवश्यकता

45 वर्"k;] l|Unj] 'o.kZ o.k dh lqn dU;k] cgr gkugkj] 'kkdkgkjh] d fy; oj dh vko';drk gA 13 व"kZ igys 'kknh gbZ Fkh ij consummate ugh gbZ] mlds ckn dU;k us viuh fo/kok ekrk dh lsok esa gh thou dkVus dk fu'p; fd;k ijUrq mlds ekrk mldh 'kknh esa gh viuh eqfDr le>rh gA dU;k electronics Engineering esa diploma, Central Govt job esa pMhx< esa dk;Zjr gS 40000 dh dekbZ ekfld oru gA Pensionable job, dkbZ bPNqd ;kpdh lEidZ l|fo/kk,a gA

कुपया सम्पर्क करें 9217970381 वैदिक थोटस

मन को आराम अवश्य करने दे

डा. महेश पोरवाल

जब आपका मन आशांत है, न तो जो आप काम कर रहे हैं वह सही होगा, न आपको भोजन अच्छा लगेगा चाहे कितना भी स्वादि"ट क्यों न हो न ही आपको अच्छी नींद आयेगी चाहे आप कितने भी आरामदायक बिस्तर और वातावरण में सोने का प्रयत्न करते हैं। कहने का भाव यह है कि शांत मन का बहुत महत्व है जो कि अधिकतर व्यक्ति नहीं समझ पाते हैं और इस की परवाह किये बिना अपने आप को अपनी क्षमता से उपर कामों में उलझाये रखते है, परिणाम स्वरूप उनका मन अशान्त रहता है।

अक्सर देखा गया है जब हमें कोइ शारिरिक क"V होता है तो तुरन्त हम अच्छे से अच्छे डाक्टर के पास भागते है। और जब तक बिमारी दूर नहीं होती ईलाज में लगे jgr gA यही नहीं शरीर को सुन्दर बनाने के लिये सब कुछ करते हैं यहां तक कि पलासटिक सर्जरी से भी परहेज नहीं करते। पर अगर मन आशांत है तो कहते हैं कोई बात नहीं अधिक काम की वजह से ऐसे हो ही जाता है। इस के लिये काम करना थोड़े भी छोड़ देना। बड़ी बात हुई, सर दर्द की गोली ले ली या फिर कई लोग सिगरट या शराब का सहारा ले लेते हैं। कितना फर्क रखते है मन और शरीर की समस्या को सुलझााने के लिये। यह भूल जाते हैं कि मन का शरीर पर सीधा प्रभाव है।

इसे समझने के लिये मैं अपने पिता जी द्वारा कही एक बात का ज़िकर कर रहा हूं।
वे कहते थे ––चाहे कितना भी पैसा हो, अपने पर सोच कर पैसा खर्च करना इंगलिश भा"kk e dgr g&&Frugality is the mother of all virtues. इसका फायदा समझााने के लिये तर्क देते थे कि अगर आप सोच कर पैसा खर्च करते है तो निश्चित है कि आप बईमान नहीं होंगे, अगर आप बईमान नहीं हैं तो निश्चित तौर पर आप का मन शान्त रहेगा, जब मन शान्त है तो निश्चित रूप से आप स्वस्थ रहेंगे, कारण मन का शरीर पर सीधा प्रभाव होता है।

स्थिर मन अर्थात शान्त मन एक बहुत बड़ी उपलब्धी है। भागवत गीता में भी योगी उसे कहा है जिस का मन हर स्थिती में स्थिर है।

प्रश्न आता है कि मन को आराम कैसे दें। अभी कुछ दिन पहले मैं एक बस स्टाप पर बैठा आने जाने वाले लोगों को देख रहा था। इस तरह दो घंटे बीत गये। तभी वहां मेरा एक दोस्त आ टपका और पूछा –––अरे भाई यहां बैठे आते जाते लोगों को देख कर अपना समय न"V क्यों कर रहे हो? मैने जवाब दिया––किसने कहा मैं अपना समय नष्ट कर रहा हूं। मैं तो अपने मन को खाली कर रहां हूं।

यह सत्य है कि जब मैं आते जाते लोगों को कुछ समय तक देखता रहता हूं तो मेरा मन किसी तरह की सोच या समस्या जो मुझे घेरे होती है उन से खाली हो जाता है। यह मन को आराम देने का सब से अच्छा साधन और सुगम है। जब भी आप किसी मानसिक तनाव से घिरे हुये हैं कभी घर में अकेले न बैठे। किसी पव्लिक स्थान जैसे पार्क या बाजार है वहो चले जायें और कुछ नही तो लोगों को ही देखते रहे। जैसे बहुत

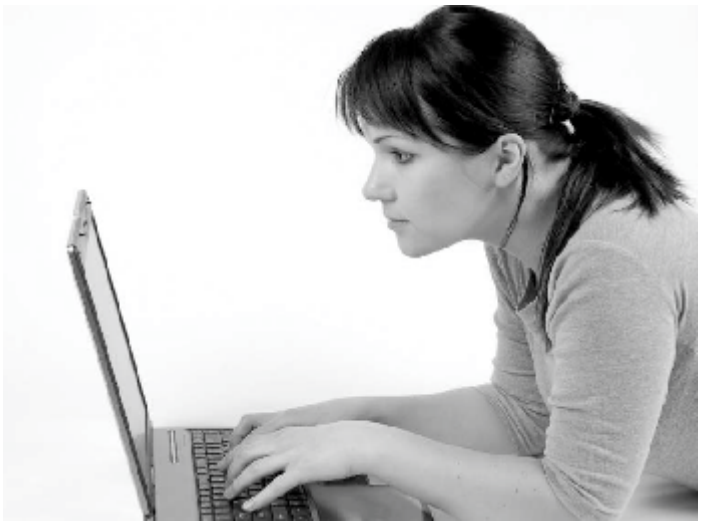

लोग जानते हैं शिमला में माल रोड बहुत मशहूर है। कुछ समय पहले तक दफतरों में काम करने वाले लोगों की आदत थी दफतर के समय के बाद माल के दो चक्कर लगा कर ही घर आया करते थे। इससे सारे दिन का मानसिक तनाव दूर हो जाता था। व्यक्ति दोस्तों से गपशप मार कर हल्का हो जाता था। पर आज जब चलना बन्द कर दिया है और सब कारों में ही आते जाते हैं तो Traffic में वाहन चलाने से तनाव और बढ़ता है। जब तक आदमी घर पहुंचता है शरीर से कम और मन से अधिक थका महसूस करता है।

अगर आप अपने मन को आराम देना चाहते हैं, नाकारात्मक सोच से बाहर आना चाहतें हैं तो सब से आवश्यक है कि मन को आराम दें। हंसना या हंसी वाले वातावरण का हिस्सा बनना भी इसका एक साधन है। मित्र होने चाहिये जिन से

शेष पृष्ठ 11 पे

WHO IS SPIRITUAL?

Neela Sood

There are many persons who unlike a few great souls like Guru Nanak Dev and Maharishi Dayanand Saraswati are not spiritual by birth but turn to spirituality at some stage of life. When this stage comes depends upon number of factors like the environment and circumstances in which one had lived, a few experiences of life which leave everlasting impact on the mind, man's quest to know who I am and who the higher self is and quite often man's exasperation with worldly pursuits.

But, for any layman, the first question that crops up is who is spiritual. Are they the one who take to ochre clothes or take to jungles, mountains or some lonely places after renouncing the workaday world? No, not necessarily. One can be spiritual while living in this workday world. Next question comes what are the essentials to be a spiritual? Well there can be an endless debate. But, the main factors on which there is no dispute are- first, a spiritual man must be at peace with himself and this is possible when he has no complaints with the environment and the people around him, Even when he doesn't speak his presence should radiate happiness to put even the disturbed person at peace. Second, he should be austere and frugal with bare minimum demands and should be able to adjust himself in all the situations. In the language of Sufi mystic ***'rookhi sookhi kha ke thanda pani pee'*** Second, he should have cultivated a virtue of self denial i.e should have the courage to opt for austerity by declining luxury and comforts even if he can afford or is provided to him. Third, the spiritual person lives in present, past doesn't dog him and uncertainties of future do not worry him. He remains untouched by anger, attachment, arrogance, lust and greed. He loves all living creatures but doesn't feel attached and does not expect love in return. Adverse situations do not provoke him and has developed in him the quality of forbearance which implies that he can overcome anger through practice of tolerance, in the most adverse situations. He has reached a stage where he can forget and forgive. With self restrain he embraces equanimity i.e maintains mental balance in all situations. Success or adulations do not excite him and failure or condemnation does not leave him demoralized.

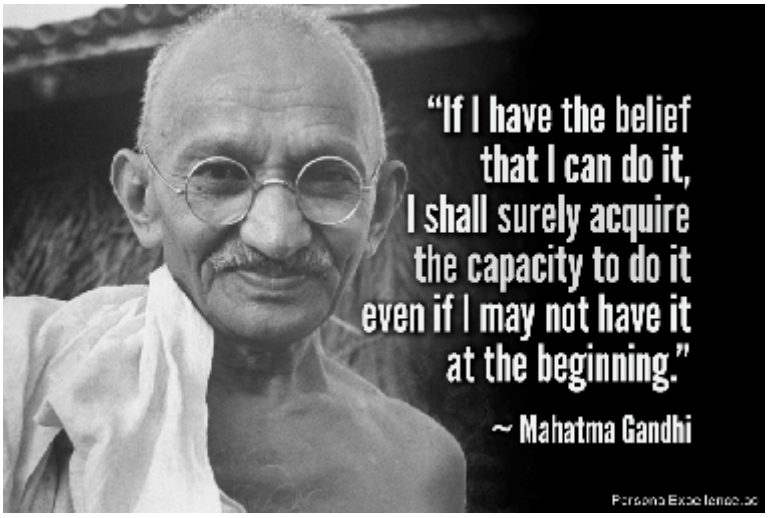

Fourth, he is benevolent and can sacrifice his own comforts to make other man comfortable. He has developed a spirit of sharing and has adapted himself to a way of life in which sacrifice gets precedence over enjoyment. He is always striving to improve the condition of the people around him by spreading light of knowledge.

Last, he is always striving to be a good person rather than trying to be a god or some holy man with mysterious powers. And the good person is one who is sensitive to the environment and people around him. The following anecdotee brings out the qualities of spiritual person.

"Once, Mahatma was traveling to Patna by train. He'd always travel in third class simply because he wanted to be identified with the common man of his country and never opted for security cover because to him security of the common man was more important than the security of the VIPs. A person sitting opposite to him had no idea of Gandhi ji and would time and again spit near his seat only.

Cont. on page 11

बात सोच की है

एक छोटा गरीब लड़का अपनी रोज़ी के लिये सड़क के किनारे खड़ी एक आलीशान कार की सफाई करने लग गया। तभी कार का मालिक जो कि नवयुवक ही था वापिस आ गया और उस लड़के से हंसते हुये बोला––कैसी लगी यह कार?

लड़का बोला––बहुत अच्छी है। सब से अलग।

नवयुवक.–– मेरे भाई ने मुझे तोहफे में दी है।

लड़का यह सुन कर सोच में डूब गया

तभी नवयुवक बोला–– मैं जानता हूं तुम यह सोच रहे हो कि तुम्हारा भी मेरे भाई जैसा ही भाई होता।
लड़का–– नहीं साहब, मैं सोच रहां हूं कि मैं भी आप के भाई की तरह ही किसी का भाई बनूं।
'Hands that give are far greater than the hands that receive'

*****

9 पृष्ठ का शेष

हल्की फुलकी बात करके मन को आराम दिया जा सके। कुछ आसान तरीके जो आप को अपनाने चाहिये वे यह है––
1 अगर आप खिलाड़ी हैं तो खेल के मैदान में चले जायें
2 पार्क, बाज़ार जहां काफी चहल पहल हो वहां पैदल धूमें, आते जातों को देखें
3 किसी ऐसी जगह पर बैठ जायें जहां आने जाने वालों के नजारे देखने को मिले
4 दोस्तों से गप शप मारें
5 ईश्वर का घ्यान अच्छा उपाय है पर आम आदमी के बस का नहीं
5 अगर आप कलाकार हैं, लेखक हैं तो उस में डूब जायें
6 अगर बिना दवाई की गोली बगैर खायें सो सकते हैं तो सो जांये।

क्या न करे
1 मोवाईल, फेस बुक आदी से दूर रहें
2 घर में अकेले न रहें, अकेलापन मन के रोगों को बढ़ाता है। शशी थरूर की पत्नि सुनंदा i|"dj शायद आत्महतया जैसा कदम न उठाती अगर वह किसी के साथ होती।
3 किसी प्रकार के नशों का सहारा न लें। यह समस्या को और बढाता है।

*****

10 पृष्ठ का शेष

Naturally, this sort of behavior discomfited Gandhi ji and he politely asked him not to spit in open as it caused nuisance to fellow passengers apart from creating filth. The man felt offended and continued with his act with vengeance. But Gandhi ji was not the one to lose temper or his patience. Now, every time he spat, Gandhi ji'd clean that with paper without any frown or sign of discomfiture on his face. But this did not deter the man and he continued with his act more to show his hegemony.

As the train reached Patna, people rushed to receive Gandhi ji. That man was stunned to know that the one who was constantly bearing with his nuisance and misplaced arrogance was the one whom even British looked with awe. He made way in the crowd and tearfully fell on Gandhi ji's feet to seek his pardon. Gandhi ji took him in his embrace and said, "Both of us have gained from this experience. My patience was put to test and now I am feeling stronger than before and you got your lesson in hygiene. Let us now capitalize on it". Indeed, I can't think of a more spiritual person than Mahatma Gandhi.

We need to understand that spirituality is not some kind of religious dogma or ideology but is the domain of awareness where we experience values like truth, goodness, beauty, love and compassion, selfless service, forgiveness, abstainance from hoarding and also intuition, creativity, insight and focused attention.

दुर्लभ ही होते हैं दुर्लभ गुणों से युक्त व्यक्ति अथवा वास्तविक साधु

सीताराम गुप्ता,

कबीरदास कहते हैं :

सिंहों के लेहँड़े नहीं हंसों की नहीं पाँत,
लालों की नहीं बोरियाँ, साधु न चलैं जमात।

अर्थात् सिंह तो गाय–भैंसों की तरह लेहँडे या विशाल झुंडों में नहीं चरते, हंस भी दुर्लभ होते हैं अतः उड़ते हुए उनकी लंबी–लंबी कतारें दृश्टिगोचर नहीं होतीं, लाल या रूबी जो कि एक क़ीमती पत्थर है उसकी भी बोरियाँ देखने में नहीं आतीं उसी प्रकार से साधु भी विरले होते हैं, वो जमात या समूह में विचरण करते नहीं देखे जाते। जमात या समूह में रहने वाले सभी साधु नहीं होते। कहने का तात्पर्य ये है कि उत्तम वस्तुएँ हों, उत्तम स्थितियाँ हों, उत्तम जीव–जंतु हों या फिर उत्तम पुरुष सभी दुर्लभ होते हैं। कई बार मन में प्रश्न उठता है कि कीमती अथवा महत्त्वपूर्ण होने के कारण वस्तुएँ अथवा संबंध दुर्लभ हा जोते हैं या मात्र दुर्लभता के कारण वस्तुएँ अथवा संबंध क़ीमती अथवा महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं?

सोना बहुत क़ीमती धातु है। सोचता हूँ कि कहीं दुर्लभ होने के कारण ही तो सोना इतना क़ीमती नहीं है? आज विश्व में जितना लोहा अथवा लोहे के भंडार उपलब्ध हैं यदि उतना ही सोना या सोने के भंडार उपलब्ध होते और सोने की जगह लोहे के तो क्या फिर भी सोना इतना ही क़ीमती और महत्त्वपूर्ण होता? यह ठीक है कि किसी भी वस्तु की प्रचुरता के कारण वह सरलता से उपलब्ध हो जाती है और अपेक्षाकृत कम क़ीमत में भी उपलब्ध हो जाती है लेकिन किसी भी वस्तु, स्थिति अथवा संबंधों का महत्त्व तो उसके गुणों अथवा गरिमा के कारण ही होता है। स्वर्ण भी बहुमूल्य है तो उसके गुणों और उपयोगिता के कारण ही बहुमूल्य है। सोने को नोबल मेटल कहा गया है क्योंकि इसमें दुर्लभ गुण हैं। सोने के जितने पतले तार या शीटें अथवा परतें बनाई जा सकती हैं अन्य किसी धातु की नहीं बनाई जा सकतीं। दूसरी धातुओं पर भी इसकी अत्यंत सूक्ष्म परत चढ़ाई जा सकती है। न तो इस पर जंग ही लगता है ओर न अन्य धातुओं की तरह इसका क्षरण ही होता है।

आज देश में ही नहीं पूरे विश्व में सिंहों की आबादी कम होती जा रही है। इसकी कई प्रजातियाँ लुप्त होने के कगार पर खड़ी हैं। हंस भी कम मिलते हैं। सिंह अथवा हंस का महत्त्व उनकी दुर्लभता अथवा जैव विविधता में उनके महत्त्व के कारण ही नहीं अपितु सिंह की बहादुरी व हंस की नीर–क्षीर–विवेक की क्षमता के कारण ही अधिक है। हीरा हो या लालो–जमर्रुद हों उनका महत्त्व भी उनके रंग–रूप व रासायनिक संरचना के गुणों के कारण ही है जिससे उनका आभूषणों में प्रचुर मात्रा में इस्तेमाल किया जा सकता है। इन सब की तरह ही साधु भी दुर्लभ होते हैं।

आज तो साधु नामक जीवों ने बड़े–बड़े संगठन और महासंगठन बना लिए हैं। साधु जमात नहीं खड़ी करता। उसे संगठन की आवश्यकता नहीं। संगठन तो व्यावसायिक हितों के पोषण के लिए खड़े किए जाते हैं। साधु को हित–अहित की परवाह नहीं होती। वह बहादुर सिंह की तरह अकेला चलता है। वह किसी विचारधारा के प्रति पूर्वाग्रह नहीं रखता। दुराग्रही नहीं होता। किसी संप्रदाय की विचार की चादर को नहीं लपेटता। वह हंस की भाँति नीर–क्षीर–विवेकी होता है। आज के साधु तो प्रायः गुटबाज़ हैं, धर्म के वास्तविक स्वरूप को विकृत अथवा खंडित कर उन्होंने न जाने कितने संप्रदाय व उपसंप्रदाय बन डाले हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण होती है किसी भी धातु अथवा पदार्थ की तरह ही एक साधु की मानसिक संरचना भी। कबीर कहते हैं :

साधु ऐसा चाहिए जैसे सूप सुभाय,
सार–सार को गहि रहै थोथा देइ उड़ाय।

एक साधु में केवल सार तत्त्व को ग्रहण करने की क्षमता होनी चाहिए। वह धर्म के मूल तत्त्व को समझे न कि कर्मकाण्ड और आडंबर को जीवन में स्थान दे। किसी भी व्यक्ति में जब उपरोक्त गुणों का विकास प्रारंभ हो जाता है तो वह साधु बनने की प्रक्रिया में आ जाता है। उसके लिए रंग विशेष के परिधान अथवा मठ की कोई आवश्यकता नहीं। उपरोक्त गुणों से युक्त अपने दैनिक कार्यों में संलग्न प्रत्येक गृहस्थ वास्तव में साधु ही है। अपनी आध्यात्मिक यात्रा में उपरोक्त गुणों को धारण करके एक कर्मशील गृहस्थ बनने के कारण ही कबीर संत शिरामणि के उच्च स्थान पर आसीन हुए इसमें संदेह नहीं।

वास्तविक साधु तत्त्व या संन्यास क्या है? दो

संन्यासी एक पहाड़ी पर स्थित अपने मठ की ओर जा रहे थे। रास्ते में एक नाला पड़ता था। वहाँ नाले के किनारे एक युवती बैठी थी जिसे नाला पार करके मठ के दूसरी ओर स्थित अपने गाँव पहुँचना था लेकिन बरसात के कारण नाले में पानी अधिक होने से युवती नाले को पार करने का साहस नहीं कर पा रही थी। संन्यासियों में से एक संन्यासी ने, जो अपेक्षाकृत युवा भी था, युवती को अपने कंधे पर बिठाया और नाले के पार ले जाकर छोड़ दिया। युवती अपने गाँव की ओर जाने वाले रास्ते पर बढ़ चली और संन्यासी अपने मठ की ओर जाने वाले रास्ते पर।

दूसरे संन्यासी ने युवती को अपने कंधे पर बिठा कर नाला पार कराने वाले संन्यासी से उस समय कुछ कहा तो नहीं पर मुँह फुलाए हुए उसके साथ–साथ पहाड़ी चढ़ता रहा। मठ आ गया तो इस संन्यासी से और नहीं रहा गया तथा अपने साथी संन्यासी से कहा, ''हमारे मत में स्त्री को छूने की ही नहीं देखने की भी मनाही है लेकिन तुमने तो एक युवा स्त्री को अपने हाथों से उठाकर कंधे पर बिठाया और नाला पार करवाया। हमारे मत के लिए ये बड़ी लज्जा की बात है।'' ''ओह तो ये बात है'' पहले संन्यासी ने कहा, ''पर मैं तो उस युवती को नाला पार कराने के बाद वहीं छोड़ आया था लेकिन लगता है कि तुम उसे अब तक ढो रहे हो।''

संन्यास का अर्थ किसी की सेवा या सहायता करने से विरत होना नहीं अपितु मन से वासना और विकारों का त्याग करना ही सही अर्थों में संन्यास है। इस दृष्टि से युवती को कंधे पर बिठाकर नाला पार कराने वाला संन्यासी सही अर्थों में संन्यासी है। यदि हम इस तथ्य को भली प्रकार समझ लें और अपने मन में समाए घातक विकारों और वासना पर नियंत्रण कर लें तो गृहस्थ होते हुए भी हम संन्यासी ही हैं। इस संसार में रहते हुए यदि मनुष्य ठान ले कि मुझे अध्यात्म–पथ पर अग्रसर होना ही है तो उसे सफलता अवश्य मिलेगी। सबसे अधिक महत्वपूर्ण तो मन की निर्मलता और निष्कपटता है।

धर्म अथवा आध्यात्मिकता के विकास में बाधक घर–संसार नहीं अपितु बाधक हैं मन में व्याप्त घातक नकारात्मक वृत्तियाँ। राग–द्वेष, घृणा आदि नकारात्मक भाव घर को भी घर नहीं रहने देते और फिर यदि इन भावों के साथ संसार का त्याग भी कर दिया तो किस काम का। हमारे अनेक महान साधु–संत, कवि, विचारक, चिंतक जो सही अर्थो में आध्यात्मिक व्यक्ति भी हुए हैं सद्गृहस्थ ही थे। संत कवि तिरुवल्लुवर और कबीर जुलाहे थे, रविदास चमड़े से जूते बनाते थे, नामदेव दर्जी का काम करते थे। निसर्गदत्त महाराज परचून की दुकान चलाते थे।

सांसारिक मुश्किलों से घबराकर पलायन करने वाला व्यक्ति ऊपरी तौर पर चाहे कितना ही परिवर्तन कर ले, भगवा वस्त्र धारण कर ले अथवा मठ में रहने लग जाए, सहजता–सरलता तथा मन की निर्मलता व निष्कपटता के अभाव में अध्यात्म–पथ का यात्री नहीं हो सकता। कर्म भी एक साधना है और कर्मयोग का साधक निष्काम कर्म द्वारा अध्यात्म–मार्ग का अनुसरण ही करता है। व्यवसाय में ईमानदारी, सेवा में कर्तव्यनिष्ठा भी आध्यात्मिकता ही तो है। राग–द्वेष, लाभ–हानि, सुख–दुख आदि परस्पर विरोधी भावों से ऊपर उठ जाना ही सच्ची आध्यात्मिकता है।

किसी भी प्रकार का वैचारिक बंधन आध्यात्मिकता की अनुभूति में बाधक ही होता है। जो व्यक्ति बिना किसी पंथ विशेष में दीक्षा लिए बिना ही मुक्त हो सके वही अध्यात्म–पथ का सच्चा यात्री और जिज्ञासु है। मनुष्य को बाँधने वाले होते हैं उसके मनोभाव। घर–बार और संसार कहाँ बाँधते हैं। घर छोड़ने पर भी रहना तो संसार में ही पड़ेगा। संसार में रहते हुए संसार को नहीं दुर्भावनाओं को त्यागा जा सकता है और जिसने दुर्भावनाओं को त्याग दिया वही सच्चे अर्थों में संन्यस्थ हो गया। संसार से नहीं घोर सांसारिकता अथवा भौतिकता से मुक्त होना ही सच्ची आध्यात्मिकता है।

फोन नं. 09555622323

*****

विज्ञापन

;g if=dk f'kf{kr ox dk ikl tkrh g vki mi;Dr oj o/k dh ryk'k]fi; tu dk J)k leu] viu 0;kikj dk vkx y tku d fy; 'kHk&v'kHk lpuk foKkiu }kjk n ldr gA

*****

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

Teaching children what it takes to be a successful person

Dr. Bharat Indu Verma

This is a powerful message for our modern society.
We seem to have lost our bearing & our sense of direction.

One young academically excellent person went to apply for a managerial position in a big company.
He passed the first interview; the director did the last interview.
The director discovered from the CV that the youth's academic achievements were excellent all the way, from the secondary school until the postgraduate research, never had a year when he did not score.
The director asked, "Did you obtain any scholarships in school?"

The youth answered "none".
The director asked, "Was it your father who paid for your school fees?"
The youth answered, "My father passed away when I was one year old, it was my mother who paid for my school fees.
The director asked, "Where did your mother work?"
The youth answered, "My mother worked as laundry woman.
The director requested the youth to show his hands.
The youth showed a pair of hands that were smooth and perfect.
The director asked, "Have you ever helped your mother wash the clothes before?"
The youth answered, "Never, my mother always wanted me to study and read more books. Furthermore, my mother can wash clothes faster than me.
The director said, "I have a request. "When you go back today, go and clean your mother's hands, and then see me tomorrow morning."
The youth felt that his chance of landing the job was high. When he went back, he happily requested his mother to let him clean her hands.
His mother felt strange, happy but with mixed feelings, she showed her hands to the young man.
The youth cleaned his mother's hands slowly. Ttears started rolling as he did that. It was the first time he noticed that his mother's hands were so wrinkled, and there were so many bruises in her hands. Some bruises were so painful that his mother shivered when they were cleaned with water.
This was the first time the youth realized that it was there pair of hands that washed the clothes everyday to enable him to pay the school fee. The bruises in the mother's

Japanese Children cleaning toilets in School

hands were the price that the mother had to pay for his graduation, academic excellence and his future.
After finishing the cleaning of his mother's hands, the youth quietly washed all the remaining clothes for his mother.
That night, mother and son talked for a very long time.

Next morning, the youth went to the director's office.

The Director noticed the tears in the youth's eyes, asked, "Can you tell me what you did and learnt yesterday in your

house?"

The youth answered, "I cleaned my mother's hands, and also finished cleaning all the remaining clothes'

The Director asked, "Please tell me your feelings."

The youth said:

1. I know now what appreciation is. Without my mother, I would not have been standing here today.
2. By working together and helping my mother, only now I realize how important it is to get the feel of the things what others are doing for you, sometime without any returns..
3. I have come to appreciate the importance and value of sharing and caring in the building up of family relationships.

The director said, "This is what I am looking for in my to be manager.

I want to recruit a person who is sensitive enough to understand the problems of others and can appreciate the importance of team work. A person who has the heart to realise the sufferings of others, You are hired.

This young person turned out to be successful manager and earned the respect of his subordinates as well as bosses.

A child, who has been protected and habitually given whatever he wanted, would develop "entitlement mentality" and would always put himself before others. He would remain ignorant of his parent's efforts. After his education when he starts working, he assumes that every person must listen to him, and when he becomes a manager, he would never know the sufferings of his employees and would always blame others. For this kind of a person, who may be good academically, he would be successful for a while but eventually would not feel sense of achievement.

If we are these kind of protective parents, then we are not showing love to our parents in its true sense. On the other hand we are spoiling them. *

You can let your children live in a big house, eat a good meal, learn piano, watch a big screen TV. But when you are cutting grass, please let them experience it. After a meal, let them wash their plates and bowls together with their brothers and sisters. Let them clean their toilets and do their laundry. It is not because you do not have money to hire a maid, you want them to understand, no matter how rich their parents are, one day their hair will grow gray, same as the mother of that young person. The most important thing is that your children learn the dignity of labour something many of our leaders don't learn even after working for decades as Ministers. If our Ex Minister Mani Shankar knew what dignity of labour was he would not have made disparging remarks about Modi and perhaps Congress party would have been in a better position than what they are with 44 seats in the house of 572.

Mobile No : 9872892484

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी,
कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

nku dh efgek

जब यक्ष युधि"टर से पूछते हैं कि मरने वाले का मित्र कौन है, तो युधि"टर उत्तर देते हैं––''हे यक्ष दान ही वह मित्र है जो मरने वाले के साथ जाता है।'' यही नहीं देने वाले को देवता कहा गया है। लेने वाले से देने वाला कहीं बड़ा है। The hand that gives is greater than the one that takes. There is a grandeur in giving, a quite dignity in being helpful to the needy. ;g g| दान की महिमा। हमारी वैदिक संस्कृति में त्याग, सेंवा, सहायता, दान और परोपकार को धर्म का अंग बताया गया है। वेद में कहा गया है सैंकड़ो हाथों से धन कमाओ और हजारों हाथों से दान करो। अथार्त धन कमाने का तभी पुण्य है जब हम दान भी nA धन की तीन गतियां होती हैं––दान, भोग और नाश। जो धन का दान व भोग नहीं करता व केवल संग्रह करता है, उसकी तीसरी गति नाश होती है। हमारे शास्त्रों में धन की सब से अच्छी गति दान मानी गई है। जब हम दान किसी ज़रूरतमन्द व्यक्ति को देते है तो उसकी आवश्यकता पूर्ण होती है। जैसे रोगी को दान देने से उसको नया जीवन मिल सकता है। इसलिये यह J"B xfr gA यदि हम दान न देकर उसका भोग करते हैं, तो हो सकता है अनावश्यक या वासना पाप करने वाले कर्मो भी किये जायें। पर हम न दान देते हैं न ही भोगते हैं तो वह धन हमारे जाने के बाद गलत हाथों में जा सकता है, घर में कलह फसाद की जड़ बन सकता है, अपनी संतान के बीच बैर भाव पैदा कर सकता है। जिनको धन कम मिला वह आपको बुरा भला भी कह सकते है। अर्थात आपका कमाया हुआ धन नाश का कारण, आपके अपयश का कारण बन सकता है। अतः कमाये हुये धन को अच्छे बुरे कर ज्ञान रखकर भोगें और साथ ही ज़रूरत मन्द को दान भी दें यही धन का सब से अच्छा प्रयोग है।

गीता में श्री क"k कहते हैं––यज्ञ, दान तप मनु";k को पवित्र व पावन बनातें हैं। श्रद्धा एवं सामर्थ्य से दान के ठीक स्वरूप को जानकर, दिया गया दान लोक परलोक दोनों में ही कल्याण करने वाला होता है। इस के विपरीत जब दान के भाव को छोड़ कर मन में धन संग्रह कर प्रवृति जागृत हुई तो समझो आप ने पाप और अधर्म के लिये घर की खिड़की खोल दी।

परन्त| क्या हर दान इस श्रेणी में आता है? इसके जवाब में गीता में भगवान कृ"ण ने दान को तीन श्रेणीयों में बांटा है

1 सात्विक दान 2. रसिक दान 3. तामसिक दान

लाला लाजपतराय

महान स्वतन्त्रता सेनानी, आर्य समाज के प्रारम्भिंक दौर के नेता और डी ए वी संस्थाओं का बीज बोने वाले लाला लाजपतराय एक बहुत सफल वकील थे। वे अपनी आय का अधिक हिस्सा दान में दे देते थे। 19वी सदी के अन्त में पड़े भी"k.ण आकाल के लिये उस समय 40000 रूप्ये की राशी दान में दी और यह दान का क्रम जीवन परयन्त चलता ही रहा।

सात्विक दान उस दान को कहा गया है जो किसी की ज़रूरत को देखकर दिया जाये व किसी भी प्रकार के नाम या बदले में किसी भी चीज की इच्छा के बिना दिया जाये। अर्थात दान सुपात्र को ही दिया जाये जो कि इसका दुरूप्योग न करें। यही नहीं शास्त्र कहते हैं दान के फल की प्राप्ति तभी होती है जब सुपात्र (the one who deserves) को दिया जाये। आगे कहा है आत्मकल्याण की इच्छा रखने वाले को चाहिये कि वह अपात्र (the one who does not deserve) को दान कभी न दे।उदाहरण के लिये किसी प्रवीण व ज़रूरतमन्द बच्चे को शिक्षा के लिये दिया गया दान

सात्विक दान की श्रेणी में आता है। दान ऐसा सात्विक कर्म हैं जो कि अन्तःकरण की शुद्धि करता हैं व पाप की वृति से दूर रखता हैं। यह भी कहा गया है कि जिस समय जिस व्यक्ति को जिस वस्तु की आवश्यकता हो उसे वही वस्तु देनी चाहिये। जैसे कोइ भूखा हो तो उसे भोजनादि से तृप्त करें, रोगी को औ"k/kh nsA और दान लेने वाले के लिये कहा गया है कि वह अपनी आवश्यकता पूर्ती लायक धन ही दान स्वरूप ले।

रसिक दान—— ऐसा दान जिस में देने वाला बदले में नाम व यश की इच्छा करता है, उसे रसिक दान कहा गया है।

rkefld nku&&&तामसिक दान वह है जो गलत ढंग से कमाये धन में से अपने पापों को कम करने के उदेश्य से दिया जाये। गलत ढंग से कमाया धन जहो भी जाएगा अनर्थ ही लाएगा। ऐसा दान देने वाले के पाप कभी कम नहीं होंगे। उसे कर्मफल के अनुसार पाप का फल भोगना ही पड़ेगा। वेद कहते हैं'' न किल्बि"kमत्र'' किये हुए कर्मो का फल कभी न"V नहीं होता। यहां इस जन्म में नही तो अगले जन्म मे भोगना पड़ेगा।

जो दान ऐसे स्थान पर दिया जाए जहां धन की आवश्यकता नहीं व लेने वाले के अहं को ही बढ़ावा दे उसे भी तामसिक दान की रेणी में रखा गया है। हमारे में अधिकतर तो आज्ञानवश दान कर रहें हैं वह तामसिक दान ही है।

सात्विक दान को सब से श्रे"ठ कहा गया है व सात्विक दान ही eu"य को देना चाहिये। जहां धन की आवश्यकता नहीं वहां धन कभी न दें, ऐसा दान लेने वाले में विलासिता, अंह व दूसरी बुराईयां ला सकता है।

वेद में आगे कहा है कि दान सदा श्रधा पूर्वक करें क्योंकि सारा धन तो उस परमपिता परमेश्वर का है।

दान के बारे में ऐसे ही विचार महात्मा बुद्ध ने दे दिये है—— महात्मा बुद्ध एक स्थान पर धर्म प्रचार कर रहे थे। प्रभावित होकर वहां के जमींदार ने वहुत बड़ी ज़मीन दान में दी। बुद्ध ने अपने स्थान पर बैठे– बैठे ज़मीन के कागज़ स्वीकार किए ,फिर वही का सब से धनाडय व्यक्ति उठा व बहुत बड़ी राशी दान मे दी। बुद्ध ने उस धन राशी को भी अपने स्थान पर बैठे– बैठे ही स्वीकार कीया। इतने में एक बुढ़िया भीड़ को चीरती हुई आई और एक पोटली झुक कर बुद्ध को देनी चाही। बुद्ध अपनी जगह से उठे व बहुत आदर भाव के साथ वह पोटली झुक कर स्वीकार ली। सब हैरान थे कि ज़मीन व आपार धन राशी तो बुद्ध ने बैठे–बैठे स्वीकार की और एक गरीब बुढ़िया की छोटी सी पोटली खड़े होकर ली। बुद्ध बोले ज़मीन व अपार धन राशी देने वालो ने तो अपनी अपार सम्पदा का कुछ हिस्सा दिया है पर इस बूढ़ी मां ने जो इस के पास था सब दे दिया। इस लिये इसके दान का कोई मुकाबला नही व झुक कर स्वीकार किया।

बिल गेटस

एक समय के दुनिया के सब से अमीर व्यक्ति बिल गेटस के जीवन के दो भाग है। पहला वह जब वह धन कमाने में लगे रहे। 50 व"k की आयु के बाद का दूसरा भाग वह जब उन्होने अपनी आय की आधी से भी अधिक सम्पति कल्याणकारी कार्यो के लिये दान में दे दी और स्वयं भी इसी कार्य में लग गये।

,d ladYi

ge viuh dekbZ ifo= j[ksxsA tc vki ,slk djrs gS rks ?kj] lekt vkSj ns'k esa lq[k 'kkfUr jgrh gSA tc vki xyr <ax ls vk jgs /ku dks Bqdjkus dk lkgl ysa vkrs gS rks vki lgh vFkksZ esa ;ksxh cu tkrs gSA

हिन्दू विद्वानों के लिए विचारणीय विषय

कृष्ण चन्द्र गर्ग

1. ईश्वर एक है, अनेक नहीं। वह निराकार है और सर्वव्यापक है। उसकी मूर्ति नहीं बन सकती। न तस्य प्रतिमाऽस्ति - (यजुर्वेद 32,3)। ईश्वर अपने सभी काम स्वयं करता है। उसके कोई पीर, पैगम्बर, अवतार या एजेंट नहीं हैं।

2. मूर्तिपूजा हिन्दुओं की सबसे बड़ी अज्ञानता है। इसने हिन्दुओं का सबसे अधिक अहित किया है। मूर्तिपूजा के कारण हिन्दू ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को भूल गये हैं, और परोपकार आदि शुभ कर्मों से दूर हो गये हैं। जो तन, मन, धन इन्सानों की सेवा में लगना चाहिए था वह पत्थर की मूर्तियों पर लग रहा है। मुसलमानों ने सैंकड़ों सालों तक हजारों मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा और वहां से बेशुमार सोना, चाँदी, हीरे-जवाहरात आदि लूटकर वे अपने देशों को ले गये हैं।

3. मर्यादा पुरुषोतम श्री राम और योगेश्वर श्री कृष्ण ईश्वर न थे और न ही ईश्वर के अवतार थे। वे महापुरुष थे। वे अपने माता-पिता से जन्मे, बड़े हुए, उनके विवाह हुए, उनके संतानें हुईं। उन्होंने भी कार्य किए और सुख-दुख भोगे। अन्त में वे भी मृत्यु को प्राप्त हुए। उन्हें याद करने का अर्थ है कि उनके सद्गुणों को हम अपने जीवन में धारण करें।

4. योगेश्वर श्री कृष्ण - महाभारत में श्री कृष्ण जी का जीवन बड़ा पवित्र बताया गया है। उन्होंने जन्म से मृत्यु तक कोई भी बुरा काम किया हो ऐसा नहीं लिखा। वे एक पत्नीव्रती थे, उनकी पत्नी थी रुक्मणी। वे सुदर्शन चक्रधारी, योगेश्वर, नीतिनिपुन, पाण्डवों को युद्ध में विजय दिलाने वाले, कंस, जरासंघ आदि दुष्ट पापाचारी राजाओं का वध करने वाले थे।

   परन्तु भागवत पुराण, ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में श्री कृष्ण जी पर दूध-दही-मक्खन की चोरी, कुब्जा दासी से संभोग, परस्त्रियों से रासलीला-क्रीड़ा आदि झूठे दोष लगाए हैं। गोपाल सहस्रनाम में श्री कृष्ण जी को चौरजारशिखामणि तक का खिताब दिया गया है जिसका अर्थ है चोरों और जारों का सरदार। ऐसी बातों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुना कर दूसरे मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निंदा करते हैं और हिन्दुओं का मज़ाक उड़ाते हैं।

   हिन्दुओं को श्री कृष्ण जी के उसी रूप को स्वीकार करना चाहिए जो महाभारत में वर्णित है। ऐसी बातों पर विभिन्न हिन्दु मतों में गोष्ठी होनी चाहिए। आर्य समाज के सन्यासी और विद्वान हवनो में ब्रह्मा बनने की बजाये ऐसे कार्य करें।

5. देवी, देवता - ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश आदि एक ईश्वर के ही नाम हैं। ये कोई अलग से देवता नहीं हैं। देवी या देवता वह है जो हमें कुछ देता है। हमारे माता-पिता देवता हैं, वे हमें जन्म देकर हमारा पालन-पोषण करते हैं। हमारा अध्यापक देवता है, वह हमें विद्या और शिक्षा देता है। कोई भी परोपकारी व्यक्ति देवता है, वह संसार का भला करता है।

6. सुख-दुख का कारण मनुष्य के अपने अच्छे-बुरे काम हैं, ग्रह नहीं। ग्रह तो जड़ हैं, ज्ञानहीन हैं और बुद्धिहीन हैं। वे किसी से प्रेम अथवा द्वेष नहीं कर सकते। ईश्वर की न्याय व्यवस्था से - दूसरों का भला करने से सुख प्राप्त होता है और दुसरों का बुरा करने से दुख मिलता है।

7. ज्योतिष नाम से चल रही भविष्य बताने की और पाप कर्म के फल से बचाने की दुकानें सब ठग विद्या है। इसमें फंसना अपना धन बर्बाद करना और परेशानी मोल लेना है। ईश्वर की व्यवस्था में मनुष्य दखल नहीं दे सकता।

8. ईश्वर हमारा माता-पिता है। हर समय वह हमारे साथ है। हमारे और ईश्वर के बीच में कोई और बिचौलिया नहीं बन सकता।

9. जो मर चुके हैं उनका श्राद्ध नहीं हो सकता। जीवित बुजुर्गों की सेवा करना ही उनका श्राद्ध है। जैसे हमें बचपन में उन्होंने पाला है वैसे ही बुढ़ापे में उनकी देखभाल करना हमारा कर्त्तव्य है।

10. जगराता पापकर्म है। लाऊडस्पीकर की ऊँची आवाज में दूसरों को परेशान करना ईश्वर भक्ति नहीं है। ईश्वर अन्तर्यामी है। हमारे मन में जो है उसे भी वह जानता है। जगराते में सुनाई जाने वाली तारा देवी की कहानी बहुत ही घटिया, असम्भव और विनाशकारी है।

11. फूल तोड़ना पाप कर्म है। डाली पर लगा हुआ फूल सुगन्ध और शोभा देता है। तोड़ने के थोड़ी देर बाद वह दुर्गन्ध देना शुरु कर देता है। पानी में सड़कर तो और अधिक दुर्गन्ध देता है।

12. मांस खाना महापाप कर्म है। मांस मनुष्य का भोजन नहीं है। मांस मनुष्य के लिए शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से हानिकर है। पशु जब अपने को मारे जाने की स्थिति में देखते हैं तब उन्हें जो कष्ट होता है उसे याद करके भी मनुष्यों को मांस नहीं खाना चाहिए। इंग्लैण्ड की साऊथैम्पटन यूनिवर्सिटी में किए परीक्षण के अनुसार शाकाहारियों का समझदारी का स्तर (I.Q.) मांसाहारियों से 5 प्रतिशत अधिक होता है।

13. कोई व्यक्ति धार्मिक है या नहीं - यह उसके आचरण और व्यवहार से पता चलता है, दिखावे के बाहरी चिन्हों से नहीं। सत्य का आचरण और पक्षपात रहित व्यवहार ही धर्म है और यही मानव धर्म है।

14. कलियुग कुकर्म करने का ठेका नहीं है। जैसे सोमवार, मंगलवार आदि दिनों के नाम हैं वैसे ही सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग समय की गणना के नाम हैं। कलियुग से डरने का कोई कारण नहीं है। जैसे अच्छे और बुरे काम हर दिन होते हैं, ऐसे ही अच्छे और बुरे काम सब युगों में होते हैं।

15. नदी, तालाब आदि में नहाने से पाप नहीं कटते और न ही मन शुद्ध होता है। कर्मों का फल भोगे बिना नहीं कटता। जैसी करनी वैसी भरनी, जो बोआ सो काटा। मन सत्य के आचरण से शुद्ध होता है और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

16. किस्मत या भाग्य – ईश्वर हमारे कामों के अनुसार हमें सुख व दुख के रूप में फल देता है – अच्छे कामों का फल सुख और बुरे कामों का फल दुख। कुछ कामों का फल उसी समय मिल जाता है और कुछ कामों का फल बाद में उचित अवसर आने पर मिलता है। जो फल हमें बाद में मिलता है उसे हम किस्मत या भाग्य कहते हैं।

17. हमारे धर्म ग्रन्थ चार वेद हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। वेद ज्ञान के पुस्तक हैं जो सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने चार ऋषियों – अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा – को दिया। वेदों में सभी मनुष्यों के कल्याण के लिए उत्तम-उत्तम उपदेश हैं, जन्म से मरण तक मनुष्यों को जीने का सही-सही ढंग बताया गया है।

कुछ लोग वेदों पर मांसाहार, सुरापान, गोहत्या आदि के झूठे दोष लगाते हैं। वेदों में ऐसी अनर्गल बातें नहीं हैं। जबकी वेदों में गाय आदि गुणकारी पशुओं की रक्षा के आदेश हैं, मदिरापान व मांसाहार का निषेध है।

पुराण हमारे धर्म ग्रन्थ नहीं हैं। बहुत से इनमें अश्लील और गलत बातों से भरे हुए हैं। पुराण महर्षि वेदव्यास के बनाये हुए नहीं हैं। बहुत बाद में बने ग्रन्थ हैं ये। महर्षि वेदव्यास तो बहुत बड़े विद्वान, धार्मिक, सदाचारी और परोपकारी पुरुष थे। वे ऐसे गपौड़े नहीं घड़ सकते थे।

18. शिवलिंग पूजा का कोई विश्वसनीय तर्क आज तक हिन्दु समाज ना दे सका जिस कारण विदेशी हमारे इस कार्य पर मजाक उड़ाते है।

19. हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। चार वेद, छः शास्त्र, ग्यारह उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता आदि सभी ग्रन्थों में हमारा नाम आर्य लिखा है, हिन्दू नहीं।

20. पुण्य, पाप – जिस काम से दूसरों का भला हो वह पुण्य और जिस काम से दूसरों का अहित हो वह पाप कहलाता है।

21. हिंसा, अहिंसा – किसी से वैर भाव रखना हिंसा कहलाती है। किसी निर्दोष को दण्ड देना हिंसा है, परन्तु दोषी को दण्ड देना हिंसा नहीं, अहिंसा है।

22. स्वर्ग, नरक – स्वर्ग या नरक नाम के कोई अलग से विशेष स्थान नहीं हैं। विशेष सुख का नाम स्वर्ग है और विशेष दुख का नाम नरक है।

23. तप क्या है – परोपकार आदि अच्छा काम करने में जो बाधाएं और कष्ट आएं उन्हें सहन कर लेना तप कहलाता है।

24. व्रत – काई भी अच्छा काम कर लेने का प्रण कर लेना और उसे निभाना व्रत कहलाता है।

25. सबसे आवश्यक है कि वेदों के अर्थ के बारे में सब हिन्दुओ में एक सहमति हो जितने संस्कृत के पंडित है उतने ही अर्थ सामने आते है। स्वामी दयानन्द द्वारा किये गए वेदो के अर्थ को ठीक मान कर चलने मे ही हिन्दु धर्म का आदर है।

26. कबर पूजा – हिन्दुओं पर अत्याचार करने वाले मुसलमानों की कबरों को हिन्दू ही पूजते हैं।

अजमेर की दरगाह शरीफ में सूफी संत मुइनुद्दीन चिश्ती की कबर है। ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती 800 वर्ष पहले भारत आया था उसने यहां पर 700 हिन्दुओं को मुसलमान बनाया था।

बहराईच, उत्तर प्रदेश के पास मसूद गजनी की मजार है। मसूद गजनी, सोमनाथ के मन्दिर को तोड़ने और लूटने वाले महमूद गजनी का बेटा था। जून 1033 में मसूद ने भारत पर आक्रमण किया था, परन्तु वह मारा गया था। हिन्दू उसकी मजार से मन्नतें मांगते हैं।

महाराष्ट्र के एक गाँव में अलीशाह की मजार है। अलीशाह बड़ा अत्याचारी था। विवाह के पश्चात हिन्दू दुलहनों को पहली रात अलीशाह के साथ गुजारनी पड़ती थी। औरंगजेब का समय था और हिन्दू मजबूर थे। अब हिन्दू औरतें उस अलीशाह की कबर को पूजती हैं।

27. प्राणीमात्र के दुख दूर करना ही मनुष्य का परम धर्म है। जो व्यक्ति समाज से अज्ञान, अन्याय और दरिद्रता दूर करता है वही ईश्वर भक्त है।

831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा, 0172-4010679

vxj vkidk dN dguk g ;k if=dk subscribe djuh g
dI;k fuEu address ij lEild dj
Hkkjr Un ln] 231 lDVj& 45-A, p.MhxM-160047
0172-2662870] 9217970381] E mail : bhartsood@yahoo.co.in

धर्म से अलग हुआ व्यक्ति पशुओं से भी अधिक गिर जाता है

प्रियम्विका सूद

Eku"; को सभी प्राणीयों में सब से अधिक बुद्धिमान माना जाता है क्योंकि वह मननशील होता है। पर वही eu"; जब धर्म को त्याग देता है तो वह पशुओं से भी अधिक गिर जाता है जैसे इस छोटी सी कहानी से सिद्ध होता है।

एक शिकारी अपनी बंदूक को मचान में छोड़ कर टहल रहा था तभी एक शेर उसे देख लेता है और उसके पीछे भागता है। शिकारी बचने के लिये भागता है और काफी भागने के बाद बचने के लिये एक बृक्ष के उपर चड़ जाता है। कुछ सुकून मिलने के बाद जैसे ही वह उपर की और देखता है तो वहां वृक्ष के उपर उसे भालू बैठा नज़र आता है। शिकारी भालू को देखकर उसके आगे गिड़गड़ाता है––मेरे प्राण न लो, मैं अपने परिवार में अकेला कमाने वाला हूं।

नीचे शेर शिकारी का इंतज़ार कर रहा था। उसे बहुत भूख लगी थी और वह शिकारी को खा कर अपनी भूख शांत करने के लिये आतुर था। जब काफी समय तक शिकारी नीचे नहीं आया तो शेर ने भालू से कहा कि वह शिकारी को नीचे धकेल दे ताकी वह वह उसे खा सके। भालू ने यह कह कर धक्का देने से इंकार कर दिया कि शिकारी उसका मेहमान है और वह मेहमान के साथ ऐसा नहीं कर सकता। परन्तु शेर वहां से गया नहीं और वहीं शिकारी का इन्तज़ार करता रहा। कुछ देर बाद भालू को नींद आ गई और वह गहरी नींद मे सो गया।

जब शेर ने भालू को सोये हुये देखा तो शिकारी से बोला––हे मानव, मैं बहुत भूखा हू, मैं यहां से तभीं जांउगा जब मेरी भूख शांत हो जायेगी। इस भालू पर विश्वास न करो, कुछ देर बाद इसकी भूख असहनीय हो जायेगी और यह तुम्हे खा जायेगा। जहां तक मेरा प्रश्न है मुझे बहुत जोर की भूख लगी है मुझे कोई फर्क नहीं, चाहे तुम मेरा भोजन बनो या फिर यह भालू। जैसे ही मेरी भूख शांत होगी है मैं यहां से चला जाउंगा। भालू नींद में है, इसे धक्का मार दो, मेरा विश्वास करो मैं इसे खा कर यहां से चला जांउगां, और तुम बच जाओगे। पर मानव तो पशुओं से भी अधिक स्वार्थी हो सकता है। उसने सोचा कि शेर से बचने का यही उपाय हैं और कृतधंनता की सभी सीमायें पार करते हुये, उसने उसी भालू को नीचे धक्का मार दिया जिसने की उसके प्राणों की रक्षा की थी। परन्तु भाग्य ने भालू का साथ दिया और नीचे गिरते उसने एक टहनी को पकड़ लिया। वह चड़ कर फिर उपर आ गया और शेर से अपनी जान बचा ली।

जब शेर ने यह सब देखा तो भालू से बोला––भालू सुनो, आदमी पर कभी विश्वास न करो। तुमने तो इस शिकारी को पनाह देकर इस की जान बचाई और यह तुम्हें ही मोत के मुँह में डाल रहा था। इस लिये अब देर न करो और शिकारी को धक्का दे कर मेरे पास पहुंचा दो। मैं इसे उचित इनाम दूंगा।

पर भालू बोला––हे शेर, मैने तो अपना कर्तव्य निभाया । मैने इसे बचाया तो ईश्वर ने मुझे बचा दिया। हम सभी को अपने कर्मो का फल मिल जाता है। मैं इसे बदले की भावना से नुकसान नहीं पहुंचाउंगा । इसे अपने किये का फल खुद व खुद मिलेगां

यह बात इस बात को सिद्व करती है कि eu"; जब धर्म को त्याग देता है तो वह पशुओं से भी अधिक गिर जाता है, इसलिये eu"; को किसी भी हालत में धर्म के गुणो की अवहेलना नहीं करनी चाहिये।

Impossible to be a God-seeker and a power-seeker at the same time

It is impossible to be a God-seeker and a power-seeker at the same time. People get addicted to power because of insecurity or a sense of emptiness within. This insecurity and emptiness begins when we distance ourselves from God.

We often run after the creations rather than the Creator.

Seek God above all things and you will find peace that the world cannot give and the world cannot take away from you.

When you find Him, you are more powerful than all the world's powers put together.

पत्नी धर्म भी उतना ही ज़रूरी जितना की राजधर्म

अच्छा होता हमारे नये प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी हमारी वैदिक काल से चल रही परम्परा और वेदों में दिये गये सन्देशों का पालन करते हुये अपनी पत्नि जसोदाबेन को शपथ ग्रहण सामारोह में उचित स्थान देते। वेदों में पत्नि को ऐसे अवसरों पर मुख्य स्थान देने का आदेश है।

जब कि उन्होंने चुनाव आयोग को दिये अपने शपथ पत्र में जसोधाबेन को अपनी पत्नी घो"kr fd;k g] ;kuh fd rykd ugh g] rk Hkkjrh; ijEijkvk d vulkj t : jh Fkk fd viuh ifRu dk 'kiFk lkekjkg e lkFk yrA Hkkjr dh ckr NkMk nfu;k d vkj fdlh dku e Hkh] ,l ekd ij ifRu dk lkFk j[krk gA ;fn eknh ,lk djr rk ,d vPNk lns'k tkrkA ftl idkj fd mud }kjk ek l vk'khokn yuk lc vkj ,d vPNk lUns'k Hk trk gA ;gk rd fd ikfdLrku d i/kku eU=h uokt 'kjhQ u Hkh bl ckr dh ppk dh fd tc mUgku o mudh ek u eknh dh ek dk viu cV dk feBkbl f[kykr n[kk rk lo dk fny Hkj vk;kA vxj ;g ckr ukV dh xbl rk vo'; gh lc bl ckr l Hkh gjku gkx fd mlu ifRu dh ,l volj ij vogyuk D;k dhA vxj ge ,l voljk ij mu lc dk xy yxk ldr g rk fd vki d 'kk;n 'kHk fpUrd ugh jg rk ml D;k ugh ftl vki u ifRu ekuk] vkj fdlh cM mn'; d fy; R;kx fn; tku d ckn Hkh ftlu vki dk vPNk gh lkpk vkj vkidk bl edke ij n[ku d fy; bl'oj l ikFkuk djrh jgh] cr fd; vkj cgr dN R;kxkA

जीवन में सन्तुलन तभी जब व्यक्ति पति के रूप में पत्नि की तरफ अपना कर्तव्य निभाये। एक आज्ञाकार पुत्र के रूप में माता पिता की और अपना कर्तव्य निभाये, मित्र के नाते एक मित्र का कर्तव्य निभाये व इसी तरह पड़ोसी होने के नाते पड़ोसी होने का कर्तव्य निभाये और देश के नागरिक के रूप मे नागरिक होने का अपना कर्तव्य निभाये। देश का मुखिया होते हुये प्रजा के प्रति अपना कर्तव्य निभायें। जीवन में इस संतुलनं का इतना महत्व है कि यदि हम इन से दूर भागकर, हर समय देश भक्ति में भी लग जायें, तब भी मो़क्ष अर्थात परम आन्नद की प्राप्ति नहीं होगी। ऐसा नहीं कि देश भक्ति का कर्तव्य निभाते हुये आप पत्नि धर्म नहीं निभा सकते।

पत्नि व्यक्ति की शक्ति है और यह साथ योन सुख और बच्चे पैदा करने तक ही सीमित नहीं। महात्मा गान्धी मोदी से भी कहीं बड़े उदेश्य को लेकर चले थे, एक उमर के बाद उन्होने योन सुख से दूर रहने की कसम खाई थी पर अपनी पत्नी कस्तूरवा को उसकी अन्तिम सांस तक साथ दिया।

किसी ने सत्य कहा है कि कई बार हम खास उदेश्यों के पीछे भागते हुये अपने दूसरे कर्तव्यों को अनदेखा कर देतें है और बाद में पछताते हैं पर तब तक समय निकल चुका होता है। शायद मोदी अपनी गलती को एक दिन अवश्य महसूस करेंगे।

Wealth

The funniest thing about wealth is that the one who possesses it is always under the threat of losing it, the one who does not posseses it is always yearning for it and the one who posseses it in abundance is always sad while parting away with it.

Thus, a wealth-connected situation produces nothing but pain.

However, people believe that it is natural for human beings to have a desire for wealth and its fruits, but they forget that this tendency gives rise to other negative tendencies, which are self-destructive.

There is no doubt wealth is one of the primary needs of a man, but it is equally true this tendency needs to be accompanied by honest and frugal living, inclination to spend for the well-being of society and last self-control even when one is rolling in money, otherwise it leads to massive havoc.

Hence, one should not wrench the benefits of wealth from the dangers of greed. There has to be a balance through self-control.

Only then corruption will end and there will be a lawful and peaceful society in the real sense.

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Ekgf"k n;kuUn ckyvkJe dh LFkkiuk Qjojh 2013 es p.MhxM+ ds lkFk yxs 'kgj ekgkyh es dh xbZ FkhA iHkq dh vlhe d`ik o vki lc ds lg;ksx ls vkt bl es 10 cPps o nks okMZu gSA bldk fujUrj fodkl gekjk mn~ns'; gSA

Ladies Club SBI LHO Chandigarh spending evening with children

नोट

बाल आश्रम मे **CCTV** केमरा लगाने के जरूरत है इसका खर्चा लगभग **RS 15000** है कोई दानी सज्जन हमारी सहायता करना चाहते है तो हम उनके बहुत आभारी है

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

योगिंदर पाल कौड़ा, नरेन्द्र गुप्ता लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी सूद

fuek.k dk 63 o"k

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Mumbai-23095120,, 9892904519, 25412033, 25334055, Banglore-22875216, Hydrabad-24651472, 24751760, Kolkata-9339344231, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Indore-982633800, Gurgaon-2332988, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790, Yamunanagar-232063, Kanpur-2398775, Nainital-235489, Mukerian-245113, Ujjain-2562140, Porbander-9825275198, Ajmer-2431084, Kota 7597306851, Jhansi-244163 , Saharanpur-09412131021

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

ftu egkuHkkoksa us cky vkJe dks fy, nku fn;k

Late : Surindra Sood

Dinesh Sood

viuh Loxhh; ekrk Jherh
lfjUnz lwn dh ;kn esa budh
lqi= vfuy lwn us fn;k

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870